

सबसे मुख् य हमें प्रभु यीशु पर वशि वास करना परन् तु इससे पहले हमें परमेश् वर पर वशि वास करना है जब तक हम परमेश् वर पति पर वशि वास नहीं करते तो हम उसके पुत्र यीशु मसीह पर क् यों कर वशि वास करेंगे? यीशु संसार में इसलिये आया क् वह हमें परमेश् वर से मिला परन् तु यदि कोई परमेश् वर है ही नहीं तो यीशु के जीने-मरने क् कोई अभिप्राय नहीं, इसलिये “अक्रिदा” में सबसे पहले परमेश् वर पर वशि वास माना जाता है, “मै इतक्रिद रखता हूं खुदा क्रदरि □ मुतलकबाप पर जसिने आसमान और जमीन के पैदा क्िया ”

अथवा

“

हर □ कपरमेश् वर सर्वशक्तमिान पति पर वशि वास करते है वह स् वरग और पृथ् वी क और समस् त दृश् य □ वम् अदृश् य वस् तुओं क क्ता है ”

ऐसे वशि वास पत्र सी. □ न.आई. तथा मेथोडस्ि ट की क्तिबों में पा जाते है और है सही-सही □

और अधकिलम् बी तौर से परमेश् वर की नसिबत हमारा वशि वास है क्

“

वह है और अपने खोजने वालों के प्रतफिल देता है □ ”

(इब्रानियों 11:6)

क्

“

वह है और था आने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है□

”

(प्रकृति वाक् य 1:8)

क

“

हम उसी में जीवित रहते और चलते-फरिते और स्थिर रहते है□

”

(प्रेरितों के कम 17:28)

बाइबल का सबसे पहला पद (उत्पत्ति 1:1) स्पष्ट करता है कि आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की

सृष्टि की □ यह मौलकिबात है और जब तक हम इस पहले पद के ग्रहण नहीं करते तो आगे बढ़ने से कोई लाभ नहीं □ जब तक हम इस मौलकिबात को नहीं मानते तो हम ख्रीष् □ टयान नहीं कहलाये जा सकते □ दाऊद ने अपने □ कगीत (भजन संहिता 14) में गाया,
“
मूर्ख ने अपने मन में कहा कि परमेश् □ वर है ही नहीं
”
, वास् □ तव में कम लोग है, जो दावा

करेंगे कि परमेश्वर है ही नहीं, अधिकि
से अधिकि यह कहा जाता है कि कोई
महाशक्ति है लेकिन वह क् या है हमें
नहीं मालूम

दो बातें सम् भावति है याने
परमेश्वर है अथवा परमेश्वर नहीं
है। यदि परमेश्वर है तो वह
सर्वशक्तिमान सृजनहार है जसिने
देखी हुई वस् तुओं के, अनदेखी
वस् तुओं के बनाया है। क् योंकि वह
सर्वशक्तिमान है हम उसके

आश्चर्यचकित चर्यक्रमों से चकित नहीं होते।
जबकि परमेश्वर की इतनी शक्ति है
तो यह मामूली बात है कि वह बाइबलि
के द्वारा हमें अपने आपको प्रगट
करता है।

यदि यह सच है कि परमेश्वर
केवल कल्पना है तो हम सचमुच
अभाग्य और अनाथ हैं। यदि
कोई सृजनहार परमेश्वर नहीं है
तब यह सरांश नकिलता है कि सृष्टि
अपने आप बना कोई अभिप्राय

उत्पन्न न हुई तथा सब धर्म
और वशिष्ठ वास बेकर हैं

यदि आपका वचन है कि
परमेश्वर केवल कल्पना है तब
आप मुझे मूर्ख समझेंगे और मैं
आपके परन्तु मरने पर यदि
आपके मालूम हो जाय कि आपका
वचन गलत था तब आपकी हानि
अधिक होगी परन्तु यदि मेरा
वचन गलत नकले तो फिर भी मेरी

कोई हानि नहीं है□

अवशि□ वासी जन शायद यह

कहना चाहेगा कि उसके

अवशि□ वास का यह लाभ होता

है कि जो कुछ वह करना चाहता

है वो करेगा परन्□ तु वशि□ वासी

के परमेश□ वर की खुशी का

वचिार करना पड़ता है□ यह बात

कुछ हद तक ठीक है परन्□ तु मेरे

जीवन भर का अनुभव है कि
पवत्रि जीवन हर समय
लाभदायक है। यह स्पष्ट
है कि वशि वासी का जीवन
हमेशा सुखदायक नहीं रहता तथा
किसी वशि वासी के धनी बनने
की कम आशा है फिर भी
आनन्द और शांति और संतोष
जो वशि वासी के मिलते हैं वे

वर्णन से बाहर है और पैसों से नहीं खरीदे जा सकते हैं।

जब मैं सृष्टि को देखता हूँ तो मेरा तर्क मुझे बतलाता है कि परमेश्वर जीवति है, उसके बाद मेरा अनुभव परमेश्वर के प्रमाणति करता है। मेरा अनुभव यह है कि 70 साल से परमेश्वर की सहायता और

अगुवाई मेरे साथ रही तथा मेरे
जीवन में अनेकऐसी घटना
घटीं जनिमें यदा परमेश्वर
की मदद न होती तो मैं बच न
नकिलता

अब आप खुद नरिणाय कीजयि
क इन दोनों वचिारों में से कैन
सा वचिार ठीक है

जब मैं जवान था, □ कगीत
गाया करता था जिसक यह
मतलब था कि
“

संसार कहता है कि मैं
कल्□ पना कर रहा हूं
परन्□ तु यदा यह
स्□ वप्□ न है तो मुझे

जगाना नहीं।

”

आख़ि़र ये बातें रह जाती

हैं

—

यहोवा क भय मानना

बुद्धि़ क मूल है।

(नीतिविचन 1:7)

और

वर्षि□ वास ही से हम

जान जाते हैं क सारी

सृष्टि की रचना

परमेश्वर के द्वारा

हुई है□ (इब्रानियों

11:3)

□ □ . □ □ □ □ □ □ □ □